JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"ज्यों मेहंदी को रंग: दोहरी उपेक्षा का शिकार होती दिव्यांग स्त्री"

दीक्षा सिंह,
शोधार्थी,
हिंदी विभाग,
सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु,
सिद्धार्थनगर

डॉ0 जय सिंह यादव,
सहायक आचार्य,
हिंदी विभाग,
सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु,
सिद्धार्थनगर

शोध सारांश

दिव्यांगता क्या है? शरीर में किसी तरह की अपंगता, किसी भाग का सामान्य से अलग होना या कार्य न करना शारीरिक दिव्यांगता को दर्शाता है यह व्यक्ति के मन में निराशा व हताशा उत्पन्न करती है व हीनता की भावना भरती है| ऐसा माना जाता है कि यदि ईश्वर किसी व्यक्ति से कुछ छीन लेता है तो उसके बदले उसे कुछ और प्रदान करता है और जो व्यक्ति उस कुछ और की पहचान कर लेता है, उसका जीवन सहज और सुगम हो जाता है| दिव्यांगों के लिए सरकार ने अनेक कानून बनाए हैं अनेक सुविधाएं प्रदान की है लेकिन समाज के रवैये और धारणाओं में परिवर्तन ना होने के कारण दिव्यांगों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है ऐसे में साहित्य में दिव्यांग विमर्श की अत्यंत आवश्यकता हैं| समाज में दिव्यांगता को अलग-अलग नजरिए से देखा जाता था कुछ लोग इसे पूर्व जन्मों का फल कहते हैं, लेकिन वैज्ञानिको द्वारा माना जाता है कि दिव्यांगता कोई अभिशाप नहीं है बल्कि बच्चे के निर्माण में कमी रह जाना ही दिव्यांगता है| इस विमर्श को केंद्र में लाने में डॉ. द्वारिका प्रसाद अग्रवाल और डॉ. विनय कुमार पाठक का विशेष योगदान रहा है आज के समय में दिव्यांगों पर विमर्श होना अत्यंत आवश्यक है साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है समाज की आवश्यकता को साहित्य भली-भांति समझता है तथा दिव्यांगों को नया जीवन देने के लिए दिव्यांग विमर्श की भूमिका महत्वपूर्ण हो सकती है| डॉ अविनाश और शालिनी दोनों ही दिव्यांगता से पीड़ित हैं तथा दिव्यांगता के कारण अपने परिवार से उपेक्षित होते हैं| यह उपन्यास स्वानुभूति एवं स्वप्रेरणा को आदर्श बनाकर लिखा गया है | दिव्यांगों को नया जीवन देने के लिए दिव्यांग विमर्श की भूमिका महत्वपूर्ण हो सकती हैं यदि इस विषय पर भी साहित्य चिंतन होने लगे तो दिव्यांगों में सम्यक प्रेरणा, प्रोत्साहन उत्पन्न हो सकेगा जिससे वे अपने भीतर की शक्ति को पहचान सकेंगे|

की वर्ड्स : ज्यों मेहंदी को रंग, दिव्यांग, विमर्श, कृत्रिम, उपन्यास, दिव्यांगता, असंवेदनशीलता

शारीरिक अथवा मानसिक अक्षमता विकलांगता है यह व्यक्ति के मन में निराशा उत्पन्न करती है जिसके फलस्वरूप व्यक्ति स्वयं व ईश्वर को कोसने लगता है और अपने को धरती का बोझ समझता है | दिव्यांगता का संबंध है ना तो किसी जाति विशेष से संबंधित है ना किसी लिंग एवं भौगोलिक क्षेत्र से सिर्फ शारीरिक अक्षमता के कारण समाज के इस हिस्से को समाज से दरकिनार कर दिया जाता है | संस्था में बिहार प्रांत के कृत्रिम पैर लगवाने आई 24 वर्षीय शालिनी की जीवन गाथा इस उपन्यास की मुख्य कथा है। लेखिका ने अपने उपन्यास में बहुत ही सरल शैली में लिखा है इस उपन्यास में दिव्यांगों की समस्याओं का बड़ी सहृदयता के साथ बड़ा ही मार्मिक रूप हमारे सामने उपस्थित हुआ है | समाज में रहने वाले कमजोर और पिछड़े लोगों तथा जरूरतमंद लोगों के प्रति संवेदना ही हमें मनुष्य बनाती है हमारे समाज में वर्ग विभाजन आदिकाल से होता चला आया है इसी समाज का एक बेहद संवेदनशील हिस्सा है दिव्यांग | लेकिन समाज के लोग उन्हें किस प्रकार से नजरअंदाज करते हैं किस प्रकार से उनका उपहास बनाते हैं यह हम सभी जानते हैं, क्यों हम उन्हें समाज से अलग समझते हैं क्यों उनके प्रति हीन दृष्टि रखते हैं | हम यह क्यों नहीं सोचते की इसी दया के बदले यदि हम उन्हें अपना सहयोग प्रदान करें, उन्हें सही दिशा दिखाएं तो ऐसा बिल्कुल भी नहीं कि वह किसी भी क्षेत्र में हम से पीछे हैं। यह उपन्यास शालिनी नामक एक नवविवाहिता नायिका पर केंद्रित है | इसमें दद्दा जी नामक एक पात्र है जो नायक के रूप में एक समझदार और सुलझे हुए व्यक्तित्व के रूप में उपन्यास की केंद्रीय धूरी है | शालिनी अपनी आंखों में भविष्य के सुनहरे सपनों को दिए हुए हैं उसकी चाल में जोश है और बोली में तेज |भ्रमण के लिए नौका विहार करते समय दुर्घटना वश पैर कट जाने से शालिनी विकलांग हो जाती है | व्यक्ति का शारीरिक रूप से विकलांग होना उतना त्रासद नहीं है जितना की मानसिक उपेक्षा व चोटों से आई विकलांगता पीड़ा देती है | शालिनी का यह कथन उसके मानस की मजबूती को उद्घाटित करता है जब वहअपने पति राजेश से कहती है क्या हुआ जो हमारे दो पैर कटे दो तो हैं परंतु तुरंत ही उसकी कल्पना पर गाज गिरती है और उनके मन की मजबूती परिजनों की भेंट चढ़ जाती है जब उस से प्रेम करने वाली या यूं कहें कि प्रेम दिखाने वाली सांस कहती है मेरे बेटे का क्या होगा उसके सामने पूरी जिंदगी पड़ी है उसकी यह बात शालिनी को उपेक्षा, अपंगता, अपूर्णता का एहसास कराता है अन्यथा दुर्घटना वश विकलांग हो जाने से भी शालिनी हारी नहीं मानती | यही कुछ पल होते हैं जब व्यक्ति मानसिक रूप से स्वयं की निशक्तता को स्वीकार कर लेता है | यह जो अक्षमता या निशक्तता है और इसका जो स्वीकार है वह मनुष्य की सृजनात्मकता की हत्या होती है, क्या सिर्फ शारीरिक पूर्णता व शारीरिक सौंदर्य ही संबंधों

की धूरी है क्या रिश्ते में हृदय का लगाव इतना कमजोर हो गया है कि हम एक दुर्घटना मात्र से अपनों की उपेक्षा करने लगेंगे | लेखिका एक विकलांग पात्र यूनुस मियां के लिए लिखती है जब से बाबू पाव कटे लोग उन्हें लंगड़ा ही कह कर पुकारते थे | यहां तक कि उनकी पत्नी ने भी कई बार गुस्से में आकर लंगड़ा कहां था |पत्नी ने कह ही दिया तो दो चार वर्षीय पुत्र क्यों पीछे रह जाता | इस प्रकार अपूर्णता को गाली बना लेना हमेशा दर्द को कुरेदने वाला तरीका अपनाते हुए दुर्घटना का चाहे अनचाहे जिक्र करके किसी की अक्षमता को मनोरंजन, कभी सहानुभूति, तो कभी मानवीयता के प्रदर्शन की पृष्ठभूमि बना लेना यह बहुत पीड़ादायक होता है | शालिनी का यह कथन इसी पीड़ा की उपज है यह पीड़ा लगातार अक्षमता और निशक्तता के भाव को उभारने से उपजी है हम उनके प्रति सहानुभूति में उनकी अपूर्णता, अक्षमता और निशक्तता की ही बात करते हैं बल्कि हमे उनमें शक्ति और सृजनात्मकता खोजना चाहिए | यह रचना अपने भाव, भाषा और कथानक पर खरी उतरी है |

यह तो हमारे समाज का दुर्भाग्य ही है, जिस समाज की पहचान संवेदनशीलता, मानवता से होती है वही समाज क्यों इन दिव्यांगों के प्रति इतना कठोर हो जाता है, इसी कारण यह वर्ग सदा ही उपेक्षित होता आया है | लेकिन हम समाज के लोग उनकी मन: स्थिति को समझने का बिल्कुल भी प्रयत्न नहीं करते कि भी लोग क्या महसूस करते हैं बहुत से लोगों द्वारा ऐसा भी कहा जाता है कि विकलांगता उनके पूर्व जन्मों का फल है , लेखिका ने इस उपन्यास में यह जगाने का प्रयास किया कि दिव्यांग होना कोई अभिशाप नहीं है बल्कि वैज्ञानिक दृष्टि से कहे तो बच्चे के निर्माण में कमी रह जाना यह उसी का परिणाम है ना कि अभिशाप है उपन्यास में लेखिका ने अपन को के पुनर्वास और स्वावलंबन की आवश्यकता पर बल भी दिया है। संवेदनशीलता किसी भी समाज की पूंजी होती है और इसी की नींव पर कोई भी सभ्यता खड़ी होती है | भारत के संविधान में विकलांग शब्द का प्रयोग निषेध है विकलांग के स्थान पर दिव्यांग कहा जाने लगा , यह इसलिए की उनमें हीन भावना उत्पन्न ना हो स्वयं को उपेक्षित महसूस ना करें | अपने स्वर्गीय पुत्र परिमल के प्रति किस भाव और भाषा में आभार व्यक्त करो पुत्र की बेबस स्थिति नहीं मुझे इस उपन्यास की रचना के लिए बात किया | अपना शरीर क्या, उंगली भी 1 इंच हिला पाने में असमर्थ परिमल अपने 18 वर्षीय जीवन में 10 वर्षों तक हमारे ऊपर पूर्ण रूप से निर्भर था फिर भी किसी ने भी उसकी दिव्यांगता कबूल नहीं की |

विनोद कुमार मिश्र जी लिखते हैं - 'दृष्टिहीनओ की हत्या के लिए रास्ते में गड्ढा खोद दिया जाता है ताकि दिव्यांग उसमें गिर कर मर जाएं'

इनकी यह पंक्तियां हमें हृदय हीनता का परिचय देती है कि किस तरह से व्यक्ति अंधा होकर दिव्यांगों की मृत्यु का गड्ढा खोदता था बल्कि होना यह चाहिए था कि उनके रास्ते को सरल बनाएं अगर हम यह कहें कि यह एक मात्र रचना ना होकर एक ज्वलंत व मानवीय समस्या प्रधान रचना है जो पाठकों में कर्तव्यनिष्ठा और संवेदना जगाती है तो कोई अतिशयोक्ति न होगी क्योंकि हिंदी उपन्यास मोटे तौर पर पाश्चात्य उपन्यास विधान को ही आधार बनाकर चला है | इस उपन्यास में एक ऐसी संस्था के वातावरण के विषय में बताया गया है जिसमें सजीवता जीवंतता तो है ही साथ ही वह केवल एक विशेष क्षेत्रीय समाज और देश के लिए नहीं अपितु पूरी मनुष्य जाति के लिए एक विस्तृत व महत्वपूर्ण संदेश है यह उपन्यास उद्देश्य प्रधान उपन्यास है जिसमें न केवल दिव्यांग वर्ग के सामाजिक एवं आर्थिक अलगाव को संवेदना से उत्तर स्वयं वेदना के स्तर पर रेखांकित किया गया है अपितु दिव्यांग वर्ग को विषमता पूर्ण स्थिति में संघर्ष करते हुए आत्मनिर्भर होकर जीवन जीने का रास्ता बताया गया है उपन्यासकार द्वारा उद्देश्य उपन्यास में खोया हुआ नहीं है बल्कि रचना प्रक्रिया में खुला हुआ है जिसकी पुष्टि शालिनी के इस वक्तव्य से भी होती है; 'एक के लिए जीने से बेहतर है अनेक के लिए जीना' | जिसकी पुष्टि पूर्व कथन से होती है जिस पर बीती है वही समझ सकता है यह अनुभूतियां हम दोनों की ही नहीं अपितु उन सब माता-पिताओं की है जिनकी स्थिति मेरी जैसी है या होगी, उत्कृष्ट है अर्थात तारतम्यता बनी हुई है अधिकारी के रूप में शालिनी की कथा ही संपूर्ण उपन्यास में मुख्य कथा के रुप में प्रवाहित हुई है जबकि यूनुस मियां लंदन से आने वाली महिला दद्दा जी की पत्नी, महेश आज की कथाएं प्रासंगिक कथाओं के रूप में है एवं गति एवं उचित है उपन्यास की उत्कृष्टता की पुष्टि हिंदी भाषा के मूर्धन्य साहित्यकार स्वर्गीय जैनेंद्र जी के वक्तव्य से होती है तभी यह रचना अपने भाव पर कथानक पर खरी उतरती है, अगर देखा जाए तोयह उपन्यास तथा इसकी कथावस्तु विश्वसनीय है क्योंकि पाठक को उपन्यास पढ़कर ऐसा लगता है कि शालिनी एवं दिव्यांग व्यक्ति की जो व्यथा इस उपन्यास में दर्शाई गई है वह देश के हर जिले के एक गांव के दिव्यांग व्यक्ति की व्यथा है |

यदि उपन्यास में पात्रों की बात की जाए तो शालिनी, दद्दा जी की शारीरिक स्फूर्ति काम करने की लगन और स्नेह से भरा हुआ हृदय देखकर कोई नहीं जान पाता कि उनके पैर नहीं है इस रहस्य को अपने अंदर छुपाए वह सैकड़ों लोगों को जीवन दान दे रहे थे |, मास्टर जी जैसे प्रमुख पात्रों के अतिरिक्त राजेश,

महिमा, रेखा, मैनेजर साहब, यूनुस मियां, महेश, शर्मा जी जैसे गॉड पात्र भी है सर्वाधिक महत्त्व दद्दा जी और शालिनी जैसे प्रमुख पात्रों को प्रदान किया गया है जो की उपन्यास कला की उत्कृष्टता का प्रमाण माना जाता है उपन्यास लेखक के हाथ की कठपुतली मात्र नजर नहीं आते अपितु पात्रों को पर्याप्त स्वतंत्रता भीप्राप्त है विचारों को व्यक्त करते समय लेखक का हस्तक्षेप प्रतीत होता है , किंतु इसमें भी कथानक की गति में अवरोध नहीं आने दिया उपन्यास के पात्र व्यावहारिक प्रतीत होते हैं अर्थात उनमें गुण एवं अवगुण का आनुपातिक रूप से समावेशन पाया जाता है केवल आदर्श की प्रतिमूर्ति ही नजर नहीं आते, शालिनी उपन्यास का प्रमुख स्त्री पात्र है शालिनी उपन्यास का केंद्र बिंदु है, वह धूरी है है जिसके इर्द-गिर्द पूरा उपन्यास घूमता है उपन्यास के सभी पात्र प्रत्यक्ष रूप से पूरी तरह से शालिनी से जुड़े हुए हैं इस उपन्यास के माध्यम से लेखिका ने समाज का ध्यान दिव्यांगों की ओर आकृष्ट करने का और उनकी समस्याओं को समझने का प्रयास किया है या लोगों को बताने का प्रयास किया है कि दिव्यांग किस प्रकार की मानसिकता लेकर अपना जीवन यापन करते हैं उन्हें किन किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है कोई भी साहित्यिक विधा उस समय तक लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकती जब तक कि उसकी भाषा विषय एवं देशकाल केअनुसार ना हो यह उपन्यास कसौटी पर भी खरा उतरा है , जैसे शिक्षित व्यक्ति परिमार्जित भाषा का प्रयोग करते हैं वही यूनुस मियां उर्दू भाषा का प्रयोग करते हैं जैसे **'इस शेर में क्या फरमाया है शायर ने'।**

इसके अतिरिक्त केरल से आए दंपत्ति क्षेत्रीय भाषा के अनुरूप उच्चारण करते दिखते हैं उपन्यास में संस्कृत भाषा का भी प्रयोग देखने को मिलता है शालिनी के कंठ से सु मधुर ध्वनि गुंजारीत हुई है "**ओम असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्मा अमृतम गमय**" इसमें अलंकृत मुहावरेदार भाषा का प्रयोग हुआ है भाषा को और प्रभावशाली बनाने के लिए लेखिका ने अलंकृत भाषा का प्रयोग किया है जैसे **'शालिनी कच्चे धागे से बनी पतंग की तरह कांप गई थी ऊपर से नीचे तक भीतर से बाहर तक'।** इसमें तत्सम शब्दावली का प्रयोग भी हमें देखने को मिलता है भाषा शैली में जहां लोकोक्ति की बात आती है हमारी धरोहर के रूप में भाषा शैली में अपनाई जाती है। और लेखिका ने इसे पूरी इमानदारी से उन्होंने बहुत ही गहरी बात कह दी है | प्राय: देखा गया है कि विकलांगता का दंश झेलने वाला व्यक्ति भले ही सामान्य जीवन जीने के लिए संघर्ष करता है लेकिन उसके परिवारीजन और समाज के लोग पहले ही उपेक्षा करने लगते हैं | समाज और परिवार का यह असहयोग पूर्ण व्यवहार दिव्यांगों का जीवन और मुश्किल कर देते हैं |

'जाके पांव न फटी बिवाई वो क्या जाने पीर पराई'

अर्थात उनकी स्थिति को वही समझ सकता है जो स्वयं उस स्थिति से निकला हो अन्य लोगों को उनकी पीड़ा, तकलीफ, कष्टों का एहसास मात्र भी नहीं होता | अर्थात जिस पर बीती है वही समझ सकता है |

उपन्यास में देशकाल वातावरण को भी पर्याप्त महत्व दिया गया है इस आधार पर इस उपन्यास में देश के लिए हरिद्वार, लंदन, कानपुर, अमेरिका, पटना, स्विट्जरलैंड जैसे स्थानों के बारे में भी जिक्र आया है काल के रूप में स्वतंत्र भारत का जिक्र हुआ है यदि वातावरण की बात की जाए तो जिस 'सामाजिक पारिवारिक अलगाव, लैंगिक विभेद' एवं आर्थिक बेबसी और पर निर्भरता' परिस्थितियों का जिक्र किया गया है एवं प्रमाणिक प्रतीत होता है यहां पर दो स्थलों का वर्णन है एक शालिनी के ससुराल का और दूसरा दिव्यांगों के लिए कितने पैर बनाने वाली संस्था का मुख्य कथा का स्थल पर बनाने वाली संस्था है और उसका इस उपन्यास में दिव्यांगों के अनुरूप वातावरण बनाने का सफल प्रयास किया है|उपरोक्त उपन्यास का यदि समीक्षात्मक मूल्यांकन किया जाए तो स्पष्ट होता है कि दिव्यांग वर्ग से संबंधित तथा समस्याओं पर आधारित लेखन कार्यों में से मृदुला सिन्हा के उपन्यास मूर्धन्य है क्योंकि इसमें सघन यथार्थ की उपस्थिति के साथ-साथ शिल्पगत सुगठित भी परिलक्षित होती है इसलिए देश काल और वातावरण की दृष्टि से भी यह उपन्यास एक सफल उपन्यास ह यदि संवाद कौशल की दृष्टि से उपन्यास का मूल्यांकन किया जाए तो स्पष्ट होता है कि संवाद छोटे चुस्त पात्र अनुकूल गतिशील संवाद है तथा चरित्रों का उद्घाटन करने वाले संवाद है | **उदाहरण यूनुस मियां शालिनी संवाद' , भीख ना मांगे तो क्या करें' , पैर बन जाने से क्या कलेक्टर बन जाऊंगा' , यह पैर ना हुआ तो मेरे लिए आफत' कहीं-कहीं 'एकालाप' एवं 'स्वगत**' का प्रयोग हुआ है किंतु इन्होंने भी उपन्यास की गति को अवरुद्ध नहीं किया है इस उपन्यास में एक ऐसी संस्था के वातावरण को बताया गया है जिसमें सजीवता और जीवंतता है इसमें जो संस्था है | वहां के कुछ नियम और कानून है संस्था में रहने वाले सभी व्यक्तियों को वहां के नियमों के हिसाब से ही चलना पड़ता है | परमात्मा के द्वारा सृष्टि में जो भी निर्माण किया गया है वहां बहुत कुछ ऐसा है जो सर्जनात्मक है यदि हम इतने अमानवीय तथा असंवेदनशील है तो हमें स्वयं के मूल्यांकन कीइस कसौटी पर अत्यधिक आवश्यकता है कि क्या हम पूर्ण मानव है | जब मानवीयता ही नहीं तो मानव कैसे यदि नहीं है तो शारीरिक रूप से अक्षम व्यक्तियों से अधिक सहानुभूति की आवश्यकता ऐसे समाज

को है | दद्दा जी एक स्थान पर कहते हैं सारी दुनिया अपाहिज है शर्मा सारी दुनिया बड़ी द्रुतगति से भागता चलता हृष्ट पुष्ट व्यक्ति भी अपंग है शर्मा उसकी भावनाएं तो अपंग है ना कुंठित है |शारीरिक अपंग व्यक्ति तो अपने लिए बेकार होता है परंतु मानसिक अपंग लोग तो दूसरों को बेकार बना देते हैं सारे समाज को पंगु बना बैठते हैं | अपने आप में नवीनता को लिए हुए हैं संवेदनशीलता की पृष्ठभूमि गंभीर है जिस प्रकार से मेहंदी की स्थिति होती है कि लगाने वाले को भी उसका रंग लगता है और जिसे लगाई जाती है उसे भी उसका रंग लगता है।

इस उपन्यास में यह प्रश्न उठाया गया है कि सरकार दिव्यांगों के लिए क्या करती है यह काम केवल सरकार का ही नहीं बल्कि सामाजिक स्तर पर भी होना चाहिए सरकार तो अपनी तरफ से पूरे प्रयास कर रही है लेकिन सच तो यह है कि इनको सहयोग प्रदान करने के लिए सबसे पहले इन्हें वह अंग देना चाहिए जिसके अभाव में यह विकलांग कहला रहे हैं | इस उपन्यास में सरकार द्वारा कृत्रिम अंग बनाने वाले कारखानों के बारे में संस्थाओं के बारे में भी बताया गया है जैसे कानपुर, हैदराबाद ,लखनऊ आदि जगह पर कारखाने खोले गए हैं | इनकी शिक्षा की सुविधा के लिए उड़ीसा की औलादपुर में प्रशिक्षण केंद्र खोला गया है बहुत सारी योजनाएं सरकार द्वारा चलाई जा रही दिव्यांगों को अनेक सुविधाएं प्रदान की जाती है लेकिन यह सुविधाएं उन तक पहुंचते ही नहीं है सामान्य लोग पूरी तरह स्वस्थ व्यक्ति दिव्यांगों की सुविधाओं का लाभ लेने के लिए फर्जी सर्टिफिकेट बनवा कर उनका उपयोग करता है और जो दिव्यांगजन है वह इसके लाभ से वंचित रह जाते हैं | सच कहे तो सारा समाज ही पंगु है | यहां तक की विकलांग के स्थान पर दिव्यांग शब्द का प्रयोग होने लगा फिर भी प्रश्न यह उठता है क्या नाम है परिवर्तन हो जाने से इनकी स्थिति में भी परिवर्तन आया है? क्या लोगों का नजरिया इनके प्रति बदला है? फिर भी फिर भी यह लोग इतने दुखी क्यों है? पर सबसे आवश्यक बात यह है कि इन्हीं कृत्रिम अंग और रोजगार से भी बढ़कर जो चीज चाहिए वह है उनका खोया हुआ सम्मान | क्योंकि ऐसे लोग अपना आत्मसम्मान भी खो देते हैं | दूसरों का दर्द व कष्ट वही समझ सकता है जो स्वयं उस पीड़ा से गुजरा हो उपन्यास के अंत में पता चलता है कि डॉ अविनाश स्वयं एक दिव्यांग है जो भारत में दिव्यांगों की सेवा के लिए समर्पित है | डॉ अविनाश की पत्नी उन्हें सिर्फ इसलिए छोड़कर चली जाती है क्योंकि दुर्घटना में दोनों पैर कट गए हैं | और इसी उपेक्षा से उनके हृदय में दिव्यांगों के प्रति सेवा भाव जागृत होता है, उपन्यास के विकलांग पात्र कहीं भी दयनीय, असमर्थ और बेचारे नहीं दिखाई पड़ते हैं | डॉ अविनाश और शालिनी के द्वारा लेखिका ने दिव्यांगों की सेवा भावना और सकारात्मकता का सुंदर चित्रण किया है उपन्यास के अंत में डॉ अविनाश और शालिनी के जीवन का सुंदर समाधान भी प्रस्तुत किया है उपन्यास में स्थान स्थान पर ऐसे संकेत हैं जहां सफेदपोश व्यक्तियों में और समाज सेवा के नाम पर एक कलुषित छाप हमें दिखाई देती है|

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि यह उपन्यास सरकारी व गैर सरकारी से बढ़कर स्वयं दिव्यांगों की मानसिकता में परिवर्तन की राह दिखाता है | यह उपन्यास दिव्यांग विमर्श का नया आदर्श प्रस्तुत करता है | मृदुला जी का यह उपन्यास उनकी स्वयं की अनुभूति पर लिखा गया है जिसे स्वयं उनके पुत्र परिमल की बेबस स्थिति ने लिखने के लिए बाध्य किया | दिव्यांगों को सहानुभूति नहीं उन्हें सहयोग और प्रोत्साहन चाहिए जिससे कि वे सामान्य मनुष्यों की तरह अपना जीवन यापन कर सकें प्रस्तुत उपन्यास में दिव्यांगता को अभिशाप नहीं बल्कि शक्ति, सेवा और त्याग के रूप में दिखाया गया है | संस्था के सभी पात्र किसी ना किसी प्रकार की विकलांगता से पीड़ित हैं | सभी के शरीर में कोई ना कोई कृत्रिम अंग अवश्य ही लगा हुआ है | साहित्य के माध्यम से भी हम दिव्यांग विमर्श के माध्यम से दिव्यांग जनों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने का प्रयास कर सकते हैं साहित्य विमर्श तो किए ही जा रहे हैं परंतु अभी तक इस दिशा में ज्यादा प्रयास नहीं हुए हैं इनकी स्थिति में सुधार के लिए यह एक आवश्यक और सार्थक पहल होगी इसलिए हमें साहित्य में दिव्यांग विमर्श की अत्यधिक आवश्यकता है जितने सरल व स्पष्ट शब्दों में हम साहित्य के माध्यम से अपनी बातें अपनी भावनाएं अपने विचार लोगों तक पहुंचा सकते हैं शायद ही इतना अच्छा प्रयास किसी अन्य माध्यम से हो सकता है | क्यों ना आप और हम मिलकर इन लोगों को सहानुभूति की जगह सहयोग प्रदान करें जिससे कि वह भी अपनी शक्तियों का प्रदर्शन कर सकें अक्सर हम यह बात भूल जाते हैं कि हमारे आसपास भी ऐसे बहुत सारे लोग हैं जिनमें विभिन्न प्रकार की शक्तियां और क्षमताएं हैं लेकिन हम उन्हें अच्छा मजा निशक्त समझकर उनकी ओर ध्यान नहीं देते और हमेशा की तरह उन्हें समाज से अलग रखते हुए पीछे छोड़ देते हैं | आपको और हमको हम सबको मिलकर इनकी स्थिति में परिवर्तन करने का सुधार करने का प्रयास करना है | जब तक हम सब साथ मिलकर आगे नहीं बढ़ेंगे तब तक हमारे देश का विकास भी संभव नहीं होगा | उपन्यास के विकलांग पात्र कहीं भी दयनीय और असमर्थ नहीं दिखाई देते हैं |

इस प्रकार हम कह सकते हैं की उपन्यास में जो भी विशेषताएं होनी चाहिए वह सभी इस उपन्यास में विराजमान है वे प्रभावशाली भी है उद्देश्य पूर्ण भी है।

संदर्भ ग्रंथ

- माहेश्वरी डॉ सुरेश (सं0) विकलांग विमर्श का वैश्विक परिदृश्य, भावना प्रकाशन दिल्ली, सं0 2014, पृष्ठ 194
- सिन्हा मृदुला, ज्यों मेहंदी को रंग, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, सं0 2016, भूमिका से |
- सिन्हा मृदुला, जो मेहंदी को रंग, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, सं0 2016, पृष्ठ 16
- सिन्हा मृदुला, जो मेहंदी को रंग, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, संख्या 2016, पृष्ठ 32-33
- सिन्हा मृदुला, जो मेहंदी को रंग, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, संख्या 2016, पृष्ठ 39
- सिन्हा मृदुला, जो मेहंदी को रंग, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, संख्या 2016, पृष्ठ 111
- सिन्हा मृदुला, जो मेहंदी को रंग, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, संख्या 2016, पृष्ठ 120-122
- हिंदी साहित्य एवं विकलांग विमर्श, साहित्यिक आलेख, छोटे लाल गुप्ता